

प्रकाशक

भारतीय विद्या मन्दिर

रतन बिहारीजी का मन्दिर

बनारस

लेखक के स्वामित्व सुरक्षित है।

अक्षरपत्र चित्र

मजु नाहटा

मूल्य

साठ रुपये

मुद्रक

भागचन्द सुराना

सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स

205 रवीन्द्र सरणी बलराम-1

प्रवेश

विराट वामन बन कर ही लीला कर सकता है
अन्यथा घर तो स्वयं अमचीय है।

विटप बीज में सत्य शब्द में समाकर ही
फल और अर्थ देता है

यह अनुभूति हो इस कृति की अभिव्यक्ति है।

११ नितम्बर १९९१

अनन्तमोहन शर्मा

लीला

डग	छोर
१ साधन	९
२ सम्पत्ता	१०
३ दण्ड	११
४ बन जाता	१२
५ माध्यम	१३
६ बिना श्रेता	१४
७ नही प्रार्थना	१५
८ चिन्तन	१६
९ प्राण	१७
१० दोष	१८
११ अव्यय समय	१९
१२ निद्रा	२०
१३ मन	२१
१४ सत्य	२२
१५ चेतना	२३
१६ अनुग्रह	२४
१७ पश	२५
१८ सर्वज्ञ	२६
१९ विश्वास	२७
२० कर्त्तव्य	२८
२१ दान	२९
२२ शब्द	३०
२३ अशा	३१
२४ चाहता बीज	३२
२५ उज्ज्वल है	३३
२६ पथ	३४
२७ स्वप्न	३५
२८ वर्तमान	३६
२९ सौरभ का सत्य	३७
३० विश्वकर्मा	३८
३१ कर्त्ता	३९
३२ देखता जो	४०
३३ भ्रत	४१
३४ विषधर	४२
३५ वह धूम	४३
३६ कविता	४४

३७	देता सगर	४५
३८	प्रकृति का	४६
३९	नही पचावों मे	४७
४०	रग रवि	४८
४१	करता समय	४९
४२	सूर्य	५०
४३	ऋचा	५१
४४	भूमिका	५२
४५	सशय	५३
४६	नही कंकर	५४
४७	पूजा	५५
४८	संगीत	५६
४९	अग्रह	५७
५०	रहा अविद्ध	५८
५१	हर झूल	५९
५२	झरा झुप्क	६०
५३	अते रात	६१
५४	नही सून्य	६२
५५	उग अते	६३
५६	नही अरण्य	६४
५७	विस्मय	६५
५८	नही रोता	६६
५९	नही कर सकता	६७
६०	कुण्ठा मुक्त	६८
६१	अध्ययन	६९
६२	वैदुष्य ऋष	७०
६३	धर्म	७१
६४	दिना भग किसे	७२
६५	रहती	७३
६६	करता अनुक्षण	७४
६७	हर तदव	७५
६८	भूमिका	७६
६९	प्रवाह	७७
७०	जो अगणित	७८
७१	करणा	७९
७२	अत्म श्लाघा	८०

भाईजी
माधोदासजी भूधड़ा
को

१

साधन

सगुण

साध्य

निर्गुण ।

२

सम्पत्ता

अवरण

सरदृति

सदाघरण

परम्परा

अनुसरण

संस्कार

अवतारण ।

३

दण्ड

सत्ता

क्षमा

सत !

४

बन जाता

अनगढ़

पाषाण

प्रतिमा

नही देखती

श्रद्धा

शिल्प ।

५

माध्यम

सपन का

नयन

स्मृति का

मन ।

६

बिना

श्रोता

नहीं होती

स्थापित

शब्द की सत्ता ।

७

नही
प्राथना
अभावों की
चुगली
वह
स्वयं तक
पहुँचने की
सुनसान गली।

८

चिन्तन

ऊर्जा

चिन्ता

मूर्च्छा !

९

प्रप
प्रतिमा
जीवन
परिक्रमा ।

१०

दीप
दर्शन
दपण
बन्धन ।

११

अव्यय

समय

व्यय

माध्यम

वय ।

१२

निद्रा

मृत्यु का

पूर्वाभिनय ।

१३

मन

पुर

चित्त

अन्त पुर

१४

सत्प

विन्दु

कल्पना

सिन्धु ।

१५

चेतना
चिन्मय
मन
मृण्मय ।

१६

अनुग्रह

अहेतु

कृपा

सहेतु ।

१७

यश

प्रदत्त

कीर्ति

कर गत ।

१८

सर्वज्ञ

मे

से

अनभिज्ञ ।

१९

विश्वास

विवशता

श्रद्धा

क्षमता ।

२०

कर्त्तव्य

श्लोक सम्मता

कर्म

स्थ-मत ।

२१

दान

सकाम

त्याग

निष्काम ।

२२

शब्द

शिशु

सन्दर्भ

जनक ।

૨૩

આશા

અનાગત

વિશ્વાસ

આગત ।

२४

चाहता

दीज

अवरण

अकुर

निरावरण ।

२५

उज्ज्वल

है

तम का

भविष्य ।

२६

पथ

स्वयं

न

इति

न

अथ ।

२७

स्वप्न

सत्य की

अमूर्त कला ।

२८

वर्तमान

का

क्षण

अतीत

का

संस्मरण ।

२९

सौरभ का
सत्य
उर्ध्व गमन
फल का
पतन ।

३१

कर्त्ता

मन

साक्षी

चेतन ।

३०

विश्वकर्मा

मन

चन्द्रिया

उपकरण ।

३३

ऋत

अकथ

मोक्ष

अपथ ।

३२

देखता

जो

अस में

समग्र

वह

परम हस ।

३५

वह

धूस

काजल

मिला

जिसे

स्नेह का

सम्बल ।

३४

विषधर का
घर
भक्ष्य का
विवर ।

३५

वह

धूप

काजल

मिला

जिसे

स्नेह का

सम्बल ।

३६

कविता

चिदिषा

कला

नौद ।

३७

देता सागर
हर घूद को
मझधार से
मिलने का अवसर।

३८

प्रकृति का
पुरुष से
विद्रोह
प्रलय ।

३९

नही

पद्यतत्वो ये

कल की गजना

वह

अत्मा का

गुणधर्मी ।

४०

रंग

रवि

रस

चन्दमा

छवि

भाटी ।

४१

करता समय
स्वयं को
बीज में व्यतीत
जबतक
नहीं आता
उगने का
क्षण ।

४२

सूर्य

यज्ञग्नि

पृथ्वी

विभूति ।

४३

अथ
अनुभूति की
स्वचा !

४४

भूमिका

छप

उपसहार ।

४५

सहाय

प्रथम चरण

विश्वास

मजिल !

४६

नही
ककर
घञ का
लभ्य
शिखर ।

४७

पूजा
समर्पण की
अनुज्ञा ।

४८

संगीत

गीत का

सहचर

नहीं अनुचर।

४९

आग्रह
शृङ्खल
पूर्वाग्रह
अर्गला ।

५०

रहा

अविन्द

शूल नोक पर

तुहिन-कण

बह सिन्द ।

५१

हर

मूल

कोई

दिना रास

फूल ।

५४

नरो

शून्य

निर्वेद

घटता

प्रकाश

सरसाता

मेघ

वह सवेद ।

५५

उग आते
ढाल पर
शूल
नहीं खिलते
बिना घृत्ना फूल ।

५६

नहो अरण्य

देखता

विहग

विटप

जो शरण्य ।

५७

विस्मय

प्रेरणा

सशय

गवेषणा ।

५८

नहीं होता

तिव्त

विदेशी ममाछी का

सहित मधु।

५९

नहीं
कर सकता
बिनाष्ट
बूद का अस्तित्व
सागर का
अहर्निश मन्थन ।

६०

कुण्डा मुक्त

मन

वैकुण्ठ ।

૬૧

અધ્યયન

જોતાઈ

સ્વાધ્યાય

બોઆઈ ।

६२

वैदुष्य ऋण

मनीषा

मूल धन ।

६३

घर्म

स्थिति

अघर्म

च्युति ।

६४

बिना

किये भग

वर्णमाला का

अनुशासन

नहीं बन पायेगे

ध्वनि धर्म

अक्षर

अर्थधर्म शब्द ।

६५

रहती
अस्त होने
पर भी
सूर्य की सत्ता
अन्यथा
नहीं जलता
कोई दीप।

६६

करता

अनुक्षण

परिवर्तन

सृष्टि का

नियमन ।

६७

हर तत्त्व

समिश्रण

निरपेक्ष

केवल चेतन ।

६८

भूमिका

अतीत

अभिव्यक्ति

वर्तमान

अनुभूति

भविष्य ।

६९

प्रवाह

परम्परा

रूढिपा

आवर्त्त ।

७०

जो

अगणित

बह

प्रकृति का

गणित ।

७१

करुणा

अन्तः स्रवित

दया

मनः द्रवित ।

७२

अत्य शलाघा

विस्मृति

अलोचना

स्मृति

